NOTES

Ali-Raaz

History

Chapter-1

यूरोप में राष्ट्रवाद

❖ CONTENTS

- Chapter notes step by step
- Question Answer to Book
- Most Important Objective Questions
- Most Important Short Questions
- Most Important Long Questions

- This notes is very important for board exam
- This notes is made for week students
- This notes is made in very simple language
- If you want to study science chapter-1 with full concept then you can read these notes

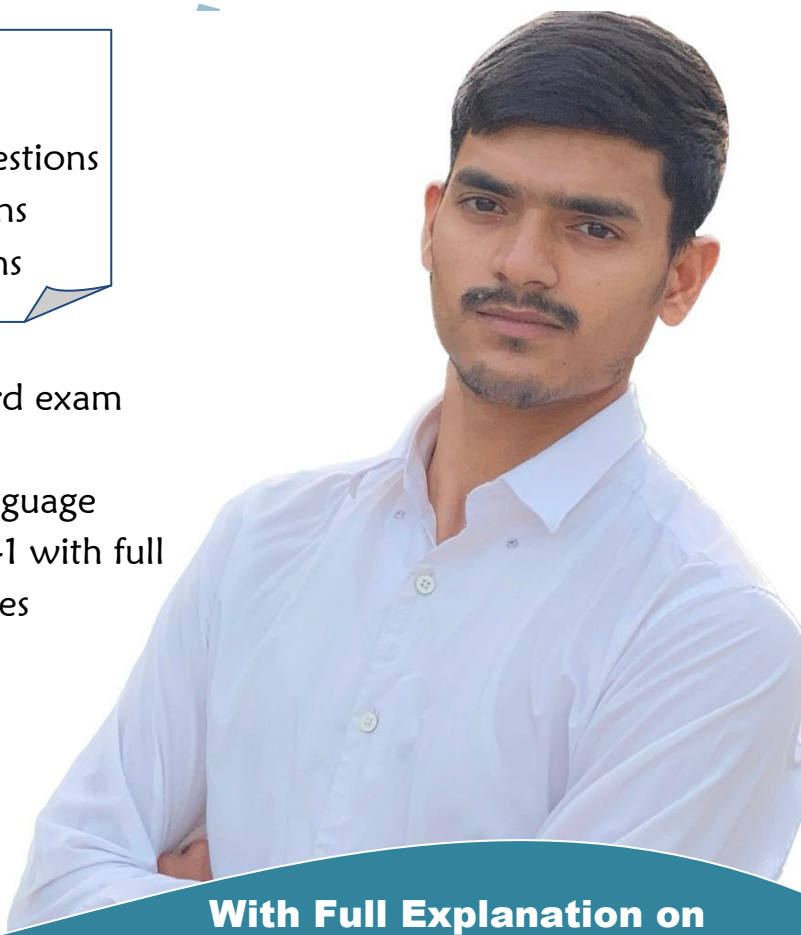

With Full Explanation on YouTube

यूरोप में राष्ट्रवाद

➢ यूरोप

यूरोप पृथ्वी पर स्थित 7 महाद्वीपों में से एक महाद्वीप है। इन महाद्वीप में 51 देश हैं, लेकिन उनमें से केवल 44 की राजधानी यूरोपीय महाद्वीप पर है। यूरोप में सबसे बड़ा देश रूस है, उसके बाद यूक्रेन और फ्रांस हैं। यूरोप का सबसे छोटा देश वेटिकन सिटी है ,यूरोप की कोई राजधानी नहीं है क्योंकि यूरोप कोई देश नहीं है बल्कि एक महादीप है जैसे भारत देश है लेकिन एशिया महादीप में स्थित है। इसी प्रकार से पूरे संसार में 7 महादीप हैं

विश्व के 7 महाद्वीपों के नाम इस प्रकार है -

एशिया, यूरोप, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, अंटार्कटिका, ऑस्ट्रेलिया

पृथ्वी का 71 प्रतिशत भाग जल और 29 प्रतिशत भाग भूमि है। विश्व के 7 महाद्वीप पृथ्वी के भूमि क्षेत्र (29%) में स्थित हैं।

- विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप एशिया और विश्व का सबसे छोटा महाद्वीप ऑस्ट्रेलिया है।
- जनसंख्या के अनुसार सबसे बड़ा महाद्वीप एशिया और सबसे छोटा महाद्वीप अंटार्कटिका है।

यूरोप के अंदर आने वाले प्रमुख देश

रूस, जर्मनी, यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, इटली, स्पेन, पोलैंड, यूक्रेन, पुर्तगाल, हंगरी, डेनमार्क, ऑस्ट्रिया, यूनान

➢ राष्ट्रवाद क्या है ?

इसको हम आसान भाषा में यूँ समझ सकते है की किसी भी भौगोलिक सीमा क्षेत्र के अंदर आने वाले वह लोग जो एक दूसरे के लिए एकताई और आपसी संयोग की भावना जो समय के साथ धीरे-धीरे बढ़ती चली जाए उसे हम "राष्ट्रवाद" कहते हैं।

नेपोलियन कौन था ?

- नेपोलियन का पूरा नाम नेपोलियन बोनापार्ट था
- नेपोलियन बोनापार्ट का जन्म 15 अगस्त 1769 में अजैसियों हुआ था
- नेपोलियन बोनापार्ट निधन 5 मई 1821 (उम्र 51) लांगवुड, सेंट हेलेना
- नेपोलियन बोनापार्ट के पिता का नाम चार्ल्स बोनापार्ट था
- नेपोलियन बोनापार्ट के माँ का नाम लेटीजिए रमोलिनो था
- नेपोलियन बोनापार्ट का धर्म रोमन कैथोलिकता

नेपोलियन का पूरा नाम नेपोलियन बोनापार्ट है उनका जन्म 15 August 1769 ई॰ को अजैसियों में हुआ था। उसके पिता का नाम चार्ल्स बोनापार्ट था चार्ल्स-बोनापार्ट एक चिरकालीन कुलीन परिवार के थे। उन्होंने लेटीजिए रेमॉलिनो (Laetitia Ramolino) नाम की एक गर्म मिजाज़ की सुंदरी से विवाह किया था। जिससे बाद नेपोलियन पैदा हुआ नेपोलियन की पढ़ाई के लिए फ्रेंच अधिकारियों ने सैनिक अकैडैमी में पढ़ाई करने के लिए उसे एक छात्रवृत्ति प्रदान की और वहाँ उसने 1779 से 1784 तक शिक्षा पाई। पढ़ाई के बाद पैरिस के सैनिक स्कूल में उसे अपना तोपखाने संबंधी ज्ञान पाने का अवसर लगभग एक वर्ष तक मिला। इस प्रकार नैपोलियन का बचपन फ्रेंच वातावरण में व्यतीत (spent) हुआ।

इतिहास में नेपोलियन विश्व के सबसे महान सेनापतियों में गिना जाता है। इनका पूरा नाम नेपोलियन बोनापार्ट था इनका जन्म 15 अगस्त 1769 में हुआ। वह इतिहास के सबसे महान विजेताओं में से एक था। उसके सामने कोई रुक नहीं पा रहा था। जब तक कि उसने 1812 में रूस पर आक्रमण(हमला) नहीं किया,जहां सर्दी और वातावरण से उसकी सेना को बहुत नुक़सान पहुँची। 18 जून 1815 वॉटरलू के युद्ध में हार के बाद अंग्रज़ों ने उसे अन्ध महासागर के दूर द्वीप(island) सेंट हेलेना में बन्दी बना दिया। छः वर्षों के अन्त में वहाँ उसकी मृत्यु हो गई।इतिहासकारों के अनुसार अंग्रेज़ों ने उसे ज़हर देकर मार डाला।

राष्ट्रवाद के प्रसार में नेपोलियन बोनापार्ट का योगदान

- नेपोलियन ने जर्मनी और इटली के राज्यों को भौगोलिक नाम की परिधि से बाहर कर उसे वास्तविक एवं राजनैतिक रूपरेखा प्रदान की। जिससे इटली और जर्मनी के एकीकरण का मार्ग में बदलाव हुआ।
- नेपोलियन बोनापार्ट के जीत के बाद राज्यों में राष्ट्रवादी भावना जागृत कर दी।
- फ्रांसीसी अधिकार वाले राष्ट्रों में नेपोलियन के संयोग से फ्रांसीसी शासन और अर्थव्यवस्था समान रूप से लागू की गई।
- नेपोलियन के संयोग के कारण इटली एवं जर्मनी के एकीकरण का मार्ग सरल हो गया और वहाँ राष्ट्रवाद का विकास हुआ।

- नेपोलियन के युद्धों और जीत से अनेक राष्ट्रों में फ्रांसीसी अधिकार के ख़िलाफ़ आंदोलन हुई । एवं आक्रोश(कोसना,,गाली देना) बढ़ा। इससे भी राष्ट्रवाद का विकास हुआ। यूरोप में राष्ट्रवाद के प्रसार की शुरुआत 1789 की फ्रांसीसी क्रांति से हुआ ।
- नेपोलियन ने अपनी जीत एवं नीतियों से राष्ट्रवादी भावना को आगे बढ़ाया। नेपोलियन के अधिकार के ख़िलाफ़ भी राष्ट्रवादी भावना का विकास हुआ।

इस तरह पूरे यूरोप में राष्ट्रवाद के प्रसार-प्रचार करने में नेपोलियन बोनापार्ट का ख़ास योगदान रहा।

नेपोलियन के पतन के कारण (नेपोलियन को आख़िर यूरोप से क्यों भागना पड़ा)

युरोप राजनीतिक क्षितिज (वह स्थान जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते हैं।) पर नेपोलियन का प्रकोप एक उल्का पिंड की तरह हुआ और अपनी प्रक्रिया(Process) तथा कड़ी मेहनत के बल पर वह जल्द ही यूरोप का भाग्य निर्माता बन बैठा। उसमें आश्चर्यजनक (wonderful) सैनिक तथा प्रशासनिक क्षमता (administrative ability) से सभी को चकित कर दिया। परंतु उसकी शक्ति का खंभा जैसे बालु की दीबार पर खड़ा था। जो कुछ ही वर्षों में भस्म हो गया वास्तव में नेपोलियन का हार उल्का के समान हुआ। वह युरोप के आकाश में सैनिक सफलता के बल पर चमकता रहा परन्तु हार के साथ ही उसके भाग्य का सितारा डूब गया। जिस साम्राज्य की कठिन मेहनत के बाद कायम किया गया था , वह देखते ही देखते समाप्त हो गया उसके हार के अनेक कारण थे जो निम्न प्रकार है।

पहला कारण -

नेपोलियन असीम महात्वकांक्षी था। असीम महात्वकांक्षी किसी व्यक्ति के पतन का मुख्य कारण साबित होती है। नेपोलियन के साथ भी यही बात थी। युद्ध में जैसे-जैसे उसकी विजय होती गई वैसे-वैसे उसकी महात्वकांक्षा बढ़ाती गया और वह विश्व राज्य की स्थापना का सपना देखने लगा। यदि थोड़े से ही वह संतुष्ट हो जाता और जीते हुए सम्राज्य की देखभाल करता और अपना समय उसमें लगाता तो उसे हार का मुँह नहीं देखनी पड़ता।

मेटरनिख कौन था ?

मेटरनिख का जन्म 15 मई 1773 में आस्ट्रिया के काबलेज नगर में हुआ था। वह कुलीन श्रेणी के खानदान से सम्बंध रखता था। अपने विश्वविद्यालय के शिक्षणकाल में उसने फ्रांस की क्रान्ति के फलस्वरूप भागे हुए कुलीनों की दुःख गाथा को सुना था तथा उसी समय से वह क्रांतिकारी भावनाओं का जानी दुश्मन बन गया था। उसका पिता पवित्र रोमन साम्राज्य का उच्चाधिकारी(superior officer) और जर्मनी का सरदार था। राइन नदी के किनारे पश्चिमी जर्मनी में उसके पिता की एक बड़ी जागीर थी। जब क्रांति के दौरान नेपोलियन ने इस जागीर पर अधिकार कर लिया तो मैटरनिक विद्यार्थी जीवन में ही क्रांति का विरोधी एवं नैपोलियन का कट्टर दुश्मन बन गया। शिक्षा समाप्त करने के बाद 1795 में उसका विवाह आस्ट्रिया के चांसलर प्रिंस कालिट्स की पुत्री के साथ हुआ। इस विवाह से उसकी राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव में वृद्धि (Growth) हुई। सन् 1801 से 1806 तक उसने अलग-अलग देशों में राजदूत (Ambassador) के पद पर कार्य किया और वह इन देशों के शासकों और राजनेता (rulers and politicians) के सम्पर्क में आया। वह सन् 1809 में आस्ट्रिया का चांसलर (प्रधानमन्त्री) बन गया और वह 1809 से 1848 तक आस्ट्रियाई साम्राज्य का विदेश मंत्री रहा। वह अपने समय का सबसे महत्वपूर्ण और सबसे बुद्धिमान गुप्त चाल आदमी था। नेपोलियन की वाटरलू हार के बाद मेटरनिख यूरोप की राजनीति का रखवाला बन गया। उसने यूरोपीय राजनीति में इतनी प्रमुख भूमिका निभाई कि 1815 से 1848 तक के यूरोपीय इतिहास का काल (period of history)'मेटरनिख युग' के नाम से प्रसिद्ध है। मेटरनिख ने अपने प्रधानमन्त्रितत्व (prime minister ship) -काल में जवाबदेही का नक़ल करने की नीति अपनाई और उसके प्रभाव के कारण आस्ट्रिया का साम्राज्य यूरोप में बहुत ही ज़्यादा महत्वपूर्ण बन गया। वह आगे भी आस्ट्रिया का प्रधानमन्त्री बना रहता यदि आस्ट्रिया में अत्याचारों के भावनाओं का प्रचार न हुआ होता। 1848 ई. में समाजवादियों , उदारवादियों और राष्ट्रवादियों ने वियना में मैटरनिक का राजमहल घेर लिया तो वह गुप्त रूप से इंग्लैंड भाग गया। कुछ साल बाद वह वापस वियना आया जहाँ 11 जून 1859 में उसकी मृत्यु हो गई। मैटरनिक क्रांति का कट्टर दुश्मन था। उसके अनुसार क्रांति एक भीषण संक्रामक(बीमारियाँ) रोग थी और इस संक्रामक रोग को जल्द ही रोकनी चाहिए। वह राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि मानता था। वह निरंकुश शासन का समर्थक था।

यूरोप में मेटरनिख का योगदान

मेटरनिख ने सबसे पहले बड़ा काम यह किया कि उसने एक लम्बे अरसे तक यूरोप को शान्ति दी। नेपोलियन के युद्धों से जख़मी यूरोप को आराम और शान्ति को बड़ी जरूरत थी। मेटरनिख ने अपने कार्यकाल में इस बात की पूरी कोशिश की कि यूरोप में शान्ति बनी रहे। सन् 1815 ई के बाद 40 वर्षों तक

यूरोप में जो शान्ति कायम रही , उसका श्रेय सही अर्थ में मेटरनिख को ही दिया जा सकता है , चाहे यह शान्ति बहुत महंगी पड़ी हो। मेटरनिख अपने समय का महान politician था। वह अपने समय में यूरोपीय राजनीति का केन्द्र था। पर कुछ कारण वश उसका पतन हुआ

मेटरमनिख युग

फ्रांस की क्रांति और नेपोलियन के युद्धों के पश्चात् यूरोप के राजनीतिक पटल पर मैटरनिक का उदय एक नए युग का सूचक था जिसे सामान्यतः मैटरनिक युगकहा जाता है। यह युग 1815-1848 तक रहा और इस काल में उसने यूरोप की राजनीति को अपने तरीके से संचालित किया। मैटरनिक प्रतिक्रियावादी विचारधारा का समर्थक था उसकी सारी नीति का सिद्धांत था- "शासन करो और कोई परिवर्तन न होने दो।" उसने अपनी प्रक्रियावादी नीति को अंजाम देने के लिए जिन तौर-तरीकों का इस्तेमाल किया उसे 'मैटरनिक व्यवस्था' कहा गया। इस व्यवस्था का उद्देश्य यूरोप में संतुलन कायम करना था। वह संतुलन जिसे फ्रांस की क्रांति और नेपोलियन के युद्धों ने भंग कर दिया था।

मैटरनिख के पतन के कारण

1848 ई. में फ्रांस की जनता ने सम्राट् लुई फिलिप के विरुद्ध क्रान्ति कर दी। लुई फिलिप भाग गया और फ्रांस में गणतन्त्र की घोषणा कर दी गई। इस समाचार को सुनकर ऑस्ट्रिया की जनता का उत्साह बढ़ गया। 13 मार्च, 1848 को मैटरनिख के विरुद्ध वियना में क्रान्ति हो गई। क्रान्तिकारियों ने मैटरनिख के महल को घेर लिया। भीड़ नारे लगा रही थी , 'मैटरनिख त्याग-पत्र दो। मैटरनिख का नाश हो। ' मैटरनिख ने परिस्थितियों की नाजुकता को पहचान लिया और कहा, "मैं एक बूढ़ा हकीम हूँ। उसने तुरन्त चांसलर पद से त्याग-पत्र दे दिया और इंग्लैण्ड भाग गया।

मैटरनिख के पतन के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे

1. मैटरनिख द्वारा साशन करने का तरीका पूरी तरह से प्रतिक्रियावादी और क्रांतिकारी विचारों का विरोधी थी। जिस कारण उसका शासन विचारशील लोगों और देशभक्तों के लिए असहनीय हो गया। .
2. मैटरनिख की ख़राब नीति के कारण पुरे यूरोप में आतंक छा गया। मैटरनिख को जो भी सहयोग मिला, वह भय के कारण मिला, अपनी मर्जी से नहीं। ऐसी स्थिति में उसका पतन अनिवार्य था।

जुलाई 1830 की क्रांति

जुलाई 1830 की क्रांति का आरंभ फ्रांस से हुआ। जुलाई 1830 में नियमों के अनुसार शासन के ख़िलाफ़ फ्रांस में क्रांति की ज्वाला भड़क उठा।नेपोलियन की हार के बाद , बूर्बो राजवंश के लुई 18वीं को फ्रांस की राजगद्दी सौंपी गई। लुई ने 2 जून 1814 को क्रांतियों के दौरान हुए नुक़सान को क़ानूनी तौर पर उसे ठीक करने की घोषणा की जो 1848 तक फ्रांस में चलते रहे। 1824 में उसकी मृत्यु के के बाद फ्रांस का राजगद्दी चार्ल्स दशम को मिला। वह एक निरंकुश शासक था।जो किसी भी क़ानून को सही ढंग से नहीं मानता था। वह क़ानूनी तौर पर राजा के रूप में शासन करने को तैयार नही था। उसका कहना था, मैं अँगरेजी राजा की तरह शासन करने की अपेक्षा लकड़ी काटना अधिक पसंद करूँगा। उसने कुलीनों और पादरियों को ख़ास अधिकार दिया। चर्च को शक्ति प्रदान किया गया। उदारवादियों को अपने ताक़त से सांत किया गया। नागरिक स्वतंत्रता का नष्ट किया गया तथा प्रेस और भाषण पर रोक लगा दी गई। बाद में चार्ल्स का विरोध बढ़ने लगा। चार्ल्स ने विरोध की परवाह नहीं की। 1830 में उसने पोलिगनेक नामक एक प्रतिक्रियावादी को अपना प्रधानमंत्री बनाया। पोलिगनेक को प्रधानमंत्री बनने के बाद इसने

1. प्रेस की स्वतंत्रता समाप्त कर दी गई
2. प्रतिनिधि सभा भंग कर दी गई
3. मतदान का अधिकार छीन कर कुलीनों को लाभ पहुँचाया गया
4. नए चुनाव करवाने की घोषणा की गई

पोलिगनेक का ये सभी हरकत देख। सभी उदारवादी , राष्ट्रवादी मिल कर राजशाही का विरोध करने का निर्णय लिया। 26 जुलाई 1830 को पेरिस की जनता ने क्रांति को आरंभ किया । रातभर पेरिस स्वतंत्रता के नारों से गूंजता रहा। इस क्रांति में सैनिकों , मजदूरों, विद्यार्थियों सभी ने भाग लिया। पेरिस की जनता ने राजा के सैनिकों और कुलीनों से खुला संघर्ष किया। इस क्रांति को लफायते आरंभ किया जिसने फ्रांस की ओर से अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था। राजा के सैनिक जनता पर नियंत्रण स्थापित नहीं कर सके। अनेक सैनिक मारे गए। बहुत सारे सैनिक क्रांति करने वालो के साथ मिल गए। 27-29 जुलाई तक जनता और राजशाही में संघर्ष होता रहा। ये तीन दिन फ्रांस के इतिहास में 'गौरवशाली तीन दिन' माने जाते हैं। जनता ने पेरिस पर अधिकार कर लिया। राजा की हार हुई। 31 जुलाई को गद्दी छोड़कर चार्ल्स दशम इंगलैंड चला गया।

1830 की फ्रांसीसी क्रांति जुलाई के महीने में हुई थी इसलिए इसे जुलाई क्रांति कहा जाता है। इस क्रांति के बाद फ्रांस में बूर्बो वंशका अंत हुआ। और आर्लेयंस वंश के लुई फिलिप को राजगद्दी सौंपी गई।

जुलाई क्रांति का प्रभाव

फ्रांस की जुलाई क्रांति का प्रभाव फ्रांस के अलावा अन्य यूरोपीय राष्ट्रों जैसे स्पेन , पुर्तगाल, स्विजरलैंड पोलैंड इटली जर्मनी इंग्लैंड आदि पर भी पड़ा।इन सभी राष्ट्रों में निरुंकुस्वाद के ख़िलाफ़ आंदोलन उठ खड़ा हुआ और फिर फ़्रांस में 1830 की क्रांति ने 1848 की क्रांति को जन्म दिया मेटरनिक ने एक बार कहा था , जब फ्रांस छींकता है तो वाकी यूरोप को सर्दी-जुकाम हो जाता है। मेटरनिक की इस उक्ति को 1830 की फ्रांसीसी क्रांति ने सिद्ध कर दिया।

सन 1848 की क्रांति

लुई फ़िलिप एक नरम क़िस्म का शासक था ,परंतु बहुत अधिक बड़ा बनने की इच्छा रखनेवाला था।उसने अपने विरोधियों को ख़ुश करने के लिए सुनहरा मौक़ा का रखते हुए सन 1848 में गिजो को प्रधानमंत्री तय किया जो कट्टर प्रतिक्रियावादी था। वह किसी भी तरह के क़ानूनी सामाजिक एवं आर्थिक सुधारों के ख़िलाफ़ था। लुई फ़िलिप ने पूँजीपति वर्ग को साथ रखना पसंद किया जिसे शासन के कमो में कोई भी लगाओ नही थी। उसके द्वारा किसी भी तरह का ऐसा काम नहीं किया था जो एक नेक नेता का काम होता है और न ही उसे विदेश नीति में किसी भी तरह के सफलता हासिल हो रही थी। उसके शासन काल में देश में भुखमरी एवं बेरोज़गारी आने लगी जिसके वजह से गिजी के ख़िलाफ़ लोगों ने आवाज़ उठाने लगी।सुधारवादियों ने 22 फ़रवरी 1848 ई० को पेरिस में उनके Leadership में एक विशाल भोज का आयोजन किया।जगह जगह रुकावट लगाए गए और लुई फ़िलिप को गद्दी छिड़ने पर मजबूर किया गया। 24 फ़रवरी को लूई फ़िलिप ने गद्दी को छोड़ दिया और इंगलैंड चला गया। इसके बाद नेशनल एसेम्बली ने गणतंत्र की घोषना करते हुए 21 वर्ष से ऊपर के सभी जवान लड़कों को वोट देने का अधिकार दिया और काम के अधिकार की गारंटी दी। गणतंत्र वादियों का नेता Lamartine एवं सुधारवादियों का नेता लुई ब्लाउ था जल्द ही दोनो में भिन्नता शुरू होग्या और लूई नेपोलियन-फ़्रांस का सम्राट बना । इस क्रांति ने न केवल फ़्रांस की पुराने व्यवस्थाओं का अंत किया बल्कि इटली , जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया,हलौंड,स्पेन,पोलैंड England आदि भी इस क्रांति से प्रभावित हुए। इटली तथा जर्मनी के उदारवादियों ने बढ़ते हुए जान दुख का फ़ायदा उठाया और राष्ट्रीय एकीकरण के द्वारा राष्ट्र राज्य की अस्थाना की माँगों को आगे बढ़ाया जो संविधान संबंधीत लोकतंत्र की सिद्धांत पर आधारित था।

1848.की क्रांति के परिणाम और महत्व

1. फ्रांस तथा यूरोप के इतिहास में 1848 की क्रांति का अत्यधिक महत्व है। इसने जनता के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में परिवर्तन लाने का प्रयास किया। 1848 की क्रांति में सामाजिक एवं आर्थिक समानता पर विशेष जोर दिया और मजदूरों तथा कारीगरों को ज़्यादा से ज़्यादा सुविधाएं देने का पर्यास किया।
2. क्रांति के दौरान यूरोप के राजनीतिक विचारों में परिवर्तन की एक लहर पैदा हुई। उदार एवं राष्ट्रीय विचारों के विकास के साथ अब गुप्त समितियों का स्थान संगठित आंदोलनों ने ले लिया।
3. क्रांति के दौरान पूरे यूरोप में निरंकुश शासन की नींव हिल(पूरा साम्राज्य) गई। राष्ट्रीय एकता और संवैधानिक स्वतंत्रता के विचार उभरने लगे क्रांति के दौरान यूरोप के देशों में सबिधानिक शासन का विकास हुआ। सार्डिनिया, स्विट्जरलैण्ड, फ्रांस, हॉलैण्ड में सबिधानिक शासन की स्थापना के लिए जन आंदोलन हुआ और उन्हें सफलता भी मिली।
4. सैनिक शक्ति का महत्व बढ़ा। क्रांतिकारियों ने सीख ली कि अब कोई भी क्रांति बिना सेना के सक्रिय सहयोग से सफल नहीं हो सकती। भविष्य में सरकारें अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संगठित सैनिक शक्ति पर अत्यधिक निर्भर रहने लगी। बिस्मार्क द्वारा जर्मनी का और गैरीबॉल्डी द्वारा इटली का एकीकरण सेना की शक्ति पर आधारित था।

1848 की क्रांतियों के असफलता के कारण

1848 की फ्रांस की क्रांति ने संपूर्ण यूरोप को हिला दिया। यूरोप के लगभग सभी देश इससे प्रभावित हुए विशेषाधिकारों और शासन को जबर्दस्त चोट पहुंची फिर भी क्रांतियां अंत में उद्देश्यों में सफल नहीं हो सकी। लगभग सभी देशों में इन्हें अंत में असफलता का मुंह देखना पड़ा। इस असफलता के निम्नलिखित कारण थे-

1. क्रांतिकारियों के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न उद्देश्य थे। क्रांतिकारी नेताओं में एकता का अभाव था। हंगरी में उदारवादी और राष्ट्रवादी एक दूसरे के साथ लड़ते रहते थे। मेजिनी, इटली में गणतंत्र चाहता था और लोगो की भिन्नता के कारण क्रांतिकारी पूरी तरह सफल नहीं हो सके।
2. क्रांतिकारियों ने राष्ट्रवाद के सिद्धांत को अवश्य स्वीकार किया परन्तु प्रत्येक देश में उनका ये नारा सफल नहीं हो पाया।
3. विद्रोह करने वाली विभिन्न जातियों में एक-दूसरे के प्रति संदेह था। बोहेमिया में चेक और जर्मन जातियों में उस समय भी कोई मेल नहीं हो सका जब उदार शासन की स्थापना का अवसर आया। इस फूट का लाभ उठाकर आस्ट्रिया के सम्राट ने वहां पुनः निरंकुश शासन की स्थापना कर दी।

यूरोप में 1848 की क्रांति की गूँज

1848 की फ्रांसीसी क्रांति का प्रभाव केवल फ्रांस तक सीमित नहीं रहा , इस क्रांति का प्रभाव संपूर्ण यूरोप पर पड़ा। 1848 में यूरोप में कुल मिलाकर 17 क्रांतियां हुईं। फ्रांस के बाद वियना, हंगरी, बोहेमिया, इटली, जर्मनी, प्रशा, स्विट्जरलैण्ड, हॉलैण्ड आदि में क्रांति हुए। 1830 की फ्रांसीसी क्रांति की तुलना में 1848 की क्रांति का प्रभाव अधिक व्यापक और प्रभावशाली रहा। विशेष रूप से मध्य यूरोप इतना अधिक प्रभावित हुआ कि वियना कांग्रेस ने जो प्रतिक्रियावादी राजनीतिक ढांचा खड़ा किया था उसकी नींव (पूरा साम्राज्य) हिल उठी।

इटली का एकीकरण

इटली 19 वीं शताब्दी के शुरू में केवल एक geographic expression था जहां कई Independent राज्य हुआ करते थे।इस कारण वहाँ अलग रहने की भावना थी।इटली के एक राष्ट्र के रूप में स्थापित होने में geographic समस्या के अलावा कई समस्याएँ भी थीं।जैसे इटली में Austria और फ़्रांस विदेशी राष्ट्रों का दखल अंदाजी की समस्या भी थी। इसलिए एकीकरण में इनका विरोध होना तय था।इधर राजधानी रोम भी पोप के प्रभाव में थी।पोप की इच्छा थी की इटली का एकीकरण खुद उनके Leadership में मज़हबी पहुँच से हो ना की शासकों के Leadership में इसके अलावा अनेक विशंगतियाँ भी समिल थी।लेकिन इतनी विशंगतियाँ होने के बावजूद भी 19 वीं सदी के शुरू से ही इटाली में राष्ट्रीयता का विकाश हो रहा था।फ़्रांस में होने वाली घटनाओं का प्रभाव भी यहाँ स्पष्ट रूप से पड़ रहा था।नेपोलीयन सैनिक कार्रवाई ने इटाली के नई चेतना तथा एकीकरण

में जो दिखाई न देने के रूप से ही सही लेकिन नेपोलीयन ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।इटली के जीत के बाद नेपोलियन ने इसे तीन गणराज्यों में बाँट दिया और सिस्पाइन गणराज्य के रूप में लिगुलियन तथा ट्रानसपेडेन उसके आने जाने के रास्तों का व्यवस्था को भी चुस्त-दुरुस्त किया तथा पूरे क्षेत्र को एक शासन के अंदर लाया।इन सभी कारणों से वहाँ जागरूकता आयी।नेपोलीयन के भागने के बाद वियना कांग्रेस द्वारा इटली को पुराने रूप में लाने के उद्देश्य से इटली के दो राज्यों पिडमाउणट और सार्डीनिया का एकीकरण कर दिया गया।इस प्रकार इटली के एकीकरण की दिशा तय होने लगी इटली में 1820 ई० से ही कुछ राज्यों में संवैधानिक सुधारों के लिए नागरिक आन्दोलन होने लगे। एक गुप्त दल 'कार्बोनारी' का गठन राष्ट्रवादियों द्वारा किया गया , जिसका उद्देश्य छापामार युद्ध के द्वारा राजतंत्र को नष्ट कर गणराज्य की स्थापना करना था। प्रसिद्ध राष्ट्रवादी नेता **जोसेफ मेजनी** का संबंध भी इसी दल से था। 1830 की फ्रांसीसी

क्रांति के प्रभाव से इटली भी अछूता नहीं रह सका और यहाँ भी नागरिक आन्दोलन शुरू हो गए। मेजिनी ने इन नागरिक आन्दोलनों का उपयोग करते हुए उत्तरी और मध्य इटली में एकीकृत गणराज्य स्थापित करने का प्रयास किया।लेकिन ऑस्ट्रिया के चांसलर मेटरनिख द्वारा इन राष्ट्रवादी नागरिक आन्दोलनों को दबा दिया गया और मेजिनी को इटली से पलायन करना पड़ा।

मेजिनी कौन था ?

मेज़िनी एक सेनापति था और सेनापति के साथ - साथ लोगों के विचारों का समर्थ और योग्य सेनापति था। लेकिन उसे नेताओं के मामले में कुछ नया ज्ञान या बेहतर समझ नही था। इसलिए उसमें आदर्शवादी (आदर करने वाला) गुण अधिक और व्यहवारिक गुण कम था।अपनी पराजय के बाद भी मेजिनी ने हार नही मानी । सन 1831 में उसने यंग इटली नाम की एक संस्था की शुरूवात की जिसने नया इटली के निर्माण में महतपूर्ण भाग लिया ।इसका उद्देश्य इटली प्रायद्वीप (तीन ओर से समुद्र से घिरा) से दखल अंदाजी करने वाले को ख़त्म करना था तथा सभी लोगों को जोड़ कर एक गणराज्य का निर्माण करना था।सन 1834 में यंग यूरोप नाम के संस्था को शुरू कर मेजिनी ने यूरोप के दूसरे देशों में चल रहे राष्ट्रीय आन्दोलन को भी प्रोत्साहित किया।सन 1848 में जान फ़्रांस सहित पूरे यूरोप में क्रांति का दौर आया तो मेटरनिख को भी अंत में Austria छोड़ना पड़ा।इसके बाद इटली की राजनीति में फिर से मेजिनी का दौर आया।मेजिनी पूरी तरह से इटली का एकीकरण कर उसे एक गणराज्य बनाना चाहता था जबकि सार्डीनिया-पिडमाउंट का शासक चार्ल्स एल्बर्त अपने Leadership में सभी प्रदेश का मेल चाहता था।उधर पोप भी इटली को धर्मराज्य बनाने का फ़िराक़ में था । इस तरह विचारों के टकराव के कारण इटली के एकीकरण का मार्ग block हो गया

मेजिनी को इटली से क्यों भागना पर या पलान करना पड़ा

1830 की फ्राँसीसी क्रांति के प्रभाव से इटली भी अछूत (जो छुआ न जा सके) नहीं रह सका और यहाँ भी नागरिक आंदोलन शुरू हो गया।मेजिनी ने इन नागरिक आन्दोलन का उपयोग करते हुए उतरी और मध्य इटली में एकीकृत गणराज्य शुरू करने का कोसिस किया लेकिन Australia के चंसलर **मेरटनिख** द्वारा इन राष्ट्रवादी नागरिक आन्दोलन को दबा दिया गया और मेजिनी को इटली से पलायन करना पड़ा।

इटली के एकीकरण का द्वितीय चरण :

1848 तक इटली के एकीकरण के लिए किये गए प्रयास हालांकि असफल ही रहे परन्तु धीरे-धीरे इटली में इन आन्दोलनों के कारण जन-जागरूकता बढ़ रही थी और राष्ट्रीयता की भावन तेज हो रही थी। इटली में सार्डिनिया-पिडमाउण्ट का नया शासक 'विक्टर इमैनुएल' राष्ट्रवाद विचार धारा का था और उसके प्रयास से इटली के एकीकरण का कार्य जारी रहा। अपनी नीतिय के कार्य में लाने के लिए विक्टर ने 'काउंट कावूर' को प्रधानमंत्री नियुक्त किया।

काउंट कावुर कौन था ?

काउंट कावूर पीडमान्ट का प्रधानमंत्री था जिसका जन्म 1 अगस्त 1810 ई.जमीनदार परिवार में हुआ था ,जिसने अपना शुरुआती जीवन एक सैनिक से शुरू किया , लेकिन बाद में उस पद से स्तीफा दे दिया और राजनीति की तरफ़ क़दम बढ़ाया 1848 में वह देश की संसद(राज्य सभा लोक सभा का संयुक्त रूप।) का सदस्य बना, और बाद में 1852 में अपनी योग्यता के द्वारा पीडमांट देश का प्रधानमंत्री बन गया,

काउंट एक सफल राष्ट्रवादी था।वह इटली के एकीकरण में सबसे बड़ी बाधा Austria को मानता था। उसने Austria को हारने के लिए फ़्रांस के साथ दोस्ती का हाथ बढ़ाया। 1853-54 के क्रिमिया आंदोलन में काउंट कावुर ने फ़्रांस की ओर से आंदोलन में शामिल होने की घोषणा कर दीं जबकि इसके लिए फ़्रांस ने किसी प्रकार का आग्रह भी। नही किया था। इसका पूरी तरह से लाभ कावुर को प्राप्त हुआ।आंदोलन के ख़त्म होने के बाद पेरिस के शांति सम्मेलन में फ़्रांस तथा Austria के साथ पिडमाउणड(इटली का राज्य का नाम है जिसका एकीकरण किया गया था कांग्रेसी द्वारा) को भी बुलाया गया।इससे कावुर की **महात्मा** बड़ गई।इस सम्मेलन में कावुर ने इटली में Austria के दख़ल अंदाजी को ग़ैरकानूनी घोषित कर दिया।जिसके कारण पूरी तरह से यूरोप का ध्यान इटली की ओर गया।इस प्रकार इटली की समस्या को कावुर ने अपनी राजनीति के बल पर पूरी तरह यूरोप की समस्या बना दिया।कावुर ने नेपोलियन से भी एक समझौता की जिसके तहत फ़्रांस ने Austria के ख़िलाफ़ पीडमाउन्ट को सैनिक द्वारा मदद करने का वादा किया।बदले में नीस और सेवाय नामाक दो रियासतें कावुर ने फ़्रांस को देने का वादा कर लिया।फ़्रांस ने कावुर को यह भी विश्वास दिया कि यदि उत्तर तथा मध्य इटली की रियासतें जनमत संग्रह के आधार पर पिडमाउंट से मिलना चाहेंगे तो फ़्रांस इसका विरोध नही करेगा ।इसके लिए कावुर की आलोचना भी की जाती है कि उसने नीस तथा सेवाय नामक प्रदेश को फ़्रांस को देने का विश्वास देकर इटली की राष्ट्रीय Asmita के साथ खिलवाड़ किया ।लेकिन यह भी महतपूर्ण है कि तब तक इटली एक राष्ट्र के रूप में उभरा भी भी था।यदि दो प्रदेश को खोकर भी उत्तरी तथा मध्य इटली का एकीकरण हो जाता तो यह बड़ी जीत achievement थी क्योंकि फ़्रांसीसी मदद के बिना इटली का एकीकरण क़वुर की नज़र में संभव नही था।इसी बीच 1859-60 में Austria और पिडमाउंट में सीमा संबंध विवाद के कारण आंदोलन शुरू हो गया आंदोलन में इटली के समर्थन में फ़्रांस ने अपनी सेना उतार दीं जिसके कारण Austrian सेना बुरी तरह हारने लगी ।Austria के एक बड़े राज्य लोम्बार्डी पर पिडमाउंट का क़ब्ज़ा हो गया ।एक तरफ़ तो लड़ाई लंबी होती जा रही थी और दूसरी तरफ़ नीपोलियन इटली के राष्ट्रवाद से डरने लगा था क्योंकि उत्तर और मध्य इटली की जनता कावुर के support में बड़े जनसैलाब के रूप में एकीकरण के लिए आंदोलन थी।नीपोलियन इस पारिस्थिति के लिए तैयार नहीं था ।इसलिए वेनेशिया पर विजय प्राप्त होने के तुरंत बाद नीपोलियन ने अपनी सेना वापस

बुला ली।आंदोलन से हटने के बाद नेपोलियन ने Austria तथा पिडमाउंट के बीच दलाली करने की बात क़बूल किया।इस तरह संधि के अनुसार लोम्बार्डी पर पिडमाउंट का अधिकार और वेनेशिया पर Austria का अधिकार माना गया।अंत में एक बड़े राज्य के रूप में इटली सामने आया । लेकिन कवुर का ध्यान मध्य तथा उत्तरी इटली के एकीकरण पर था ।इसलिए उसने नीपोलियन को सेवाय प्रदेश देने का लोभ देकर Austria पिडमाउंट आंदोलन में फ़्रांस के निष्क्रिय रहने तथा इटली के राज्यों का पिडमाउंट में मेल का विरोध नही करने का वादा ले लिया।बदले में नेपोलियन ने यह शर्त रख दी की जिन राज्य का मेल होगा वहाँ जनमत संग्रह कराये जाएँगे।क्योंकि उन रियासतों की जनता पिडमाउंट के साथ थी इसलिय कवुर ने कूटनीति का परिचेय देते हुए इसे स्वीकार कर लिया। 1860-61 में कवुर ने सिर्फ़ रोम को छोड़कर उत्तर तथा मध्य इटली की सभी रियासतों (परमा, मोडेना , तस्कनी आदि) को मिला लिया तथा जनमत संग्रह कर इसे मज़बूत भी कर लिया। Austria भी फ़्रांस तथा इंग्लैंड द्वारा पिडमाउंट के Support के डर से कई कदम नही उठा सका।दूसरी तरफ़ Austria जर्मनी के एकीकरण की समस्या से भी परेशान हो रहा था । इस प्रकार 1862 तक दक्षिण इटली रोम तथा वेनेशिया को छोड़कर बाक़ी रियासतों का मेल रोम में हो गया और सभी ने विक्टर इमैनुएल को शासक माना

ग़ैरीबाल्डी कौन था ?

जुज़ॅप्पे गारिबाल्दि (इतालवी: Giuseppe Garibaldi,) जन्म: 4 जुलाई 1807, देहांत: 2 जून 1882) इटली के एक राजनैतिक और सैनिक नेता थे जिन्होने इटली के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। कावूर, वित्तर एमानुएल द्वितीय तथा मेत्सिनी के साथ गारिबाल्दि का नाम भी इटली के 'पिताओं' में सम्मिलित है।

जब विक्टर इमैनुल को शासक माना गया तब इस बीच महान क्रांतिकारी ग़ैरीबाल्डी सशस्त्र क्रांति के द्वारा दक्षिण इटली के रियासतों के एकीकरण तथा गणतंत्र की स्थापना करने का प्रयास कर रहा था ग़ैरीबाल्डी पेशे से एक नाविक था और मेजिनी के विचारो का समर्थक था लेकिन बाद में कावुर के प्रभाव में आकर संवैधानिक राजतंत्र का वकील बन गया।ग़ैरीबाल्डी ने अपने कर्मचारियों तथा खुद सेवकों की सशस्त्र सेना बनायी ।उसने अपने सैनिकों को ले कर इटली के सिसली तथा नेपल्स प्रदेश पर हमला किया। इन रियासतों की अधिकांश जनता बुर्वो राजवंश के निरंकुश(किसी की बात न सुनने वाला) शासन से तंग होकर ग़ैरीबाल्डी की समर्थक बन गया।ग़ैरीबाल्डी ने यहाँ गणतंत्र की स्थापना की तथा विक्टर इमैनुएल के प्रतिनिधि के रूप में वहाँ की सत्ता सम्भाली।वास्तव में कावुर के विचार ग़ैरीबाल्डी से नहीं मिलते थे

लेकिन कावुर ने उसके दक्षिण अभियान का समर्थक किया । 1862 में ग़ैरीबाल्डी ने रोम पर हमला की योजना बनाई तब कावुर ने ग़ैरीबाल्डी के इस अभियान का विरोध किया और रोम की देख भाल के लिए पिडमाउणट की सेना भेज दो।इस बीच ग़ैरीबाल्डी की भेंट कावुर से हुई उसने रोम के अभियान की योजना त्याग दी।दक्षिण इटली के जीत गए क्षेत्र को बिना किसी संधि के ग़ैरीबाल्डी ने विक्टर इमैनुएल को सौंप

दिया । ग़ैरीबाल्डी को दक्षिण क्षेत्र में शासक बनने का प्रस्ताव विक्टर द्वारा दियाभी गया लेकिन उसने इसे अस्वीकार कर दिया । वह अपनी सारी सन्मपत्ति राष्ट्र को सैप कर साधारण किसान की जीवन जीने की ओर विकसित हुआ।त्याग और बलिदान की इस भावना के कारण ग़ैरीबाल्डी के चरित्र को भारतीय आज़ादी Struggle के दौरान खूब प्रचलित किया गया तथा लाला लाजपत राय ने उसकी जीवनी लिखी

1862 ई० में दुर्भाग्यवश कावूर की मृत्यु हो गई और इस तरह वह भी पूरे इटली का एकीकरण नहीं देख पाया। रोम तथा वेनेशिया के रूप में शेष इटली का एकीकरण विक्टर इमैनुएल् ने स्वयं किया। 1870-71 में फ्रांस और प्रशा के बीच युद्ध छिड़ गया जिस कारण फ्रांस के लिए पोप को संरक्षण प्रदान करना संभव नहीं था । विक्टर इमैनुएल ने इस परिस्थिति का लाभ उठाय पोप ने अपने आप को बेटिकन सिटी के किले में बंद कर लिया। इमैनुएल ने पोप के राजमहल को छोड़कर बाकी रोम को इटली में मिला लिया और उसे अपनी राजधानी बनायी इस नई स्थिति को पोप ने तत्काल स्वीकार नहीं किया । इस समस्या का अंतत: मुसोलिनी द्वारा निदान हुआ जब उसने पोप के साथ समझौता कर वेटिकन की स्थिति को स्वीकार कर लिया।

जर्मनी का एकीकरण :

इटली के एकीकरण के दौरान ही जर्मन क्षेत्र में भी समान क्रिया चल रही थीं। अतः दोनों देशों का एकीकरण लगभग साथ-साथ ही सम्पन्न हुआ।

जर्मनी को आधुनिक युग तक आते-आते जर्मनी पूरी तरह से अलग -अलग राज्य में परिवर्तन होग्य था , जिसमें लगभग 300 छोटे-बड़े राज्य थे। उनमें राजनीतिक , सामाजिक तथा धार्मिक विषमताएँ भी मौजूद थीं। उत्तर जर्मन राज्यों में जहाँ विरोध करने वाले व्यक्तियों की संख्या ज्यादा थी , वहाँ **प्रशा** सबसे शक्तिशाली राज्य था एवं अपना प्रभाव बनाए हुए था। जर्मन एकीकरण की भूमि निर्माण का श्रेय नेपोलियन बोनापार्ट को दिया जाता है क्योंकि उसने 1806 ई० में जर्मन प्रदेशों को जीत कर राईन राज्य का निर्माण किया था और लोग मिल जुल कर रहने लगे और यहीं से जर्मन राष्ट्रवाद की भावना धीरे-धीरे बढ़ने लगी थी।

इसी दौरान जर्मनी में पढ़े लिखे लोग , किसानों तथा कलाकारों, जैसे-हीगेल काण्ट, हम्बोल्ट, अन्डर्ट, जैकब ग्रीम आदि ने जर्मन राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया। हीगेल ने ऐतिहासिक व्याख्या करते हुए जर्मन राष्ट्रवाद के विकास में भूमिका निभाई। प्रशा का चांसलर बिस्मार्क हीगेल के विचारों से काफी प्रभावित था । अंडर्ट ने कविताओं के माध्यम से देशभक्ति की भावनाओं को जागरूत किया ।हर्डेनवर्ग तथा नोवोलिस ने जर्मनी के

बीते हुए कल को सामने रखा। चित्रकारों ने जर्मन संस्कृति को उजागर किया । उन्होंने ने नायक नायिकाओं की जीवंत चित्रों द्वारा भी राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया। इस प्रकार अब जर्मनी भी पुराने व्यवस्था से पूरी तरह निकल कर आधुनिक (modern) युग में प्रवेश करने को तैयार हुआ। जर्मनी में राष्ट्रीय आन्दोलन में शिक्षण संस्थानों एवं विद्यार्थियों का भी योगदान था। शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने जर्मनी एकीकरण के उद्देश्य से 'Brushen Shaft' नामक सभा स्थापित की। वाइमर राज्य का येना विश्वविद्यालय राष्ट्रीय आन्दोलन का केन्द्र था। हालाँकि मेटरनिख ने इस आन्दोलन को कुचलने की कोशिश किया परन्तु फिर भी जर्मनी में राष्ट्रीयता की प्रबल धारा प्रवाहित होती रही। लेकिन 1848 की फ्रांसीसी क्रांति ने जर्मन राष्ट्रवाद को एक बार फिर भड़का दिया। दूसरी तरफ इस क्रांति ने मेटरनिख के युग का अंत भी कर दिया। इसी समय जर्मन राष्ट्रवादियों ने मार्च 1848 में पुराने संसद की सभा को फ्रैंकफर्ट में बुलाया। जहाँ यह निर्णय लिया गया कि प्रशा का शासक फ्रेडरिक और विलियम जर्मन राष्ट्र का leadership करेगा और उसी के अंतर्गत पूरे जर्मन राज्यों को एक जुट किया जायेगा , साथ ही लोकतांत्रिक सिद्धान्त को सभिधान के तौर पर अपनाया जायेगा। परन्तु फ्रेडरिक, जो एक निरंकुश एवं रूढ़िवादी विचार का शासक था ,उसने इस व्यवस्था को मानने से इंकार कर दिया।साथ ही जर्मन राज्यों में विद्रोह की स्थिति पैदा हो गयी जिसे ऑस्ट्रिया और प्रशा ने मिल कर दबा दिया। प्रशा अब तक समझ चुका था कि जर्मनी का एकीकरण उसी के leadership में हो सकता है। इसलिए उसने अपनी सैन्य शक्ति बढ़ानी शुरू कर दी। इसी बीच फ्रेडरिक का देहान्त हो गया और उसका भाई विलियम प्रशा का शासक बना। विलियम राष्ट्रवादी विचारों मानने वाला था। विलियम ने एकीकरण के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर महान कूटनीतिज्ञ बिस्मार्क को अपना चांसलर (प्रधानमंत्री) नियुक्त किया।

बिस्मार्क कौन था

ऑटो एडुअर्ड लिओपोल्ड बिस्मार्क (1 अप्रैल 1815 - 30 जुलाई 1898), वह 'ओटो फॉन बिस्मार्क' के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। उसने अनेक जर्मनभाषी राज्यों का एकीकरण करके शक्तिशाली जर्मन साम्राज्य स्थापित किया। वह अपने युग का बहुत बड़ा कूटनीतिज्ञ था। अपने कूटनीतिक सन्धियों के तहत फ्रांस को मित्रविहीन कर जर्मनी को यूरोप की सर्वप्रमुख शक्ति बना दिया। बिस्मार्क 1862 में प्रशा का द्वितीय चान्सलर बना और अपनी कूटनीति, सूझबूझ **रक्त एवं लौह की नीति** के द्वारा जर्मनी का एकीकरण पूर्ण किया। 1871 ई. में एकीकरण के बाद बिस्मार्क ने घोषणा की कि जर्मनी एक सन्तुष्ट राष्ट्र है और वह उपनिवेशवादी प्रसार में कोई रूचि नहीं रखता।

बिस्मार्क

बिस्मार्क जो जर्मन संसद में प्रशा का प्रतिनिधि हुआ करता था, शुरू से ही **हीगेल** के विचारों से प्रभावित था और जर्मन संसद (डायट) में अपनी सफल कूटनीति का लगातार परिचय देता आ रहा था। वह निरंकुश राजतंत्र का समर्थन करते हुए जर्मनी के एकीकरण के प्रयास में जुट गया। यह उसकी कूटनीतिक सफलता थी जर्मन में रहने वाले सभी लोग उसे अपने विचारों का समर्थक समझते थे। बिस्मार्क जर्मन एकीकरण के लिए सैन्य शक्ति के महत्व को समझता था। अतः इसके लिए उसने 'रक्त और लौह की नीति' का अवलम्बन किया। बिस्मार्क का मानना था कि सैन्य उपायों से ही जर्मनी का एकीकरण संभव था। उसने अपने देश में अनिवार्य सैन्य सेवा लागू कर दी। **कालांतर** में उसने 1830 के ऑस्ट्रिया प्रशा के संयोग का विरोध करना शुरू किया, जिसमें प्रशा के leadership में जर्मनी का एकीकरण नहीं किया जाना था।

बिस्मार्क ने अपनी नीतियों से प्रशा का सुदृढ़ी करण किया और इस कारण प्रशा , ऑस्ट्रिया से किसी भी मायने में कम नहीं रह गया। तब बिस्मार्क ने ऑस्ट्रिया के साथ मिलकर 1864 ई० में **शेल्सविग** और **होल्सटिन** राज्यों के मुद्दे को लेकर **डेनमार्क** (एक देश) पर आक्रमण कर दिया। क्योंकि उन पर डेनमार्क का नियंत्रण था। जीत के बाद **शेल्सविग** प्रशा के अधीन हो गया और **होल्सटिन** ऑस्ट्रिया को प्राप्त हुआ। चूँकि इन दोनों राज्यों में जर्मनों की संख्या अधिक थी अतः प्रशा ने जर्मन राष्ट्रवादी भावनाओं को भड़का कर आंदोलन फैला दिया, जिसे कुचलने के लिए ऑस्ट्रिया की सेना को प्रशा के क्षेत्र को पार करते हुए जाना था और प्रशा ने ऑस्ट्रिया को ऐसा करने से रोक दिया।

हालाकि बिस्मार्क की नीति के अंतर्गत ऑस्ट्रिया से युद्ध करना ज़रूरी समझता था परन्तु वह ऑस्ट्रिया को क्रांतिणकारी साबित करना चाहता था इसलिए पहले ही बिस्मार्क ने फ्रांस से समझौता कर लिया था कि ऑस्ट्रिया-प्रशा युद्ध में फ्रांस चुप चाप रहे। इसके लिए उसने फ्रांस को कुछ क्षेत्र भी देने का वादा किया था। बिस्मार्क ने इटली के शासक विक्टर **इमैनुएल** से भी हाथ मिला लिया जिसके अनुसार ऑस्ट्रिया-प्रशा युद्ध

में इटली को ऑस्ट्रियाई क्षेत्रों पर आक्रमण करना था। आख़िरकार अपने अपमान से परेशान होकर ऑस्ट्रिया ने 1866 ई० में प्रशा के खिलाफ सेडोवा में युद्ध की घोषणा कर दी और ऑस्ट्रिया दोनों तरफ से युद्ध में फँस कर बुरी तरह पराजित हो गया , इस तरह ऑस्ट्रिया का जर्मन क्षेत्रों पर से प्रभाव समाप्त हो गया और इस तरह जर्मन एकीकरण का आधा से ज़्यादा कार्य पूरा हो गया।शेष जर्मनी के एकीकरण के लिए फ्रांस के साथ युद्ध करना ज़रूरी था। क्योंकि जर्मनी के दक्षिणी रियासतों के मामले में फ्रांस दखलअन्दाज़ी कर सकता था। इसी समय स्पेन की राजगद्दी का मामला उभर गया , जिस पर प्रशा के राजकुमार की जन्म से ही अनुरोध थी। परन्तु फ्रांस ने इस अनुरोध का खुलकर विरोध किया और प्रशा से इस मामले में एक लिखित वादा मांगा। बिस्मार्क ने इस बात को तोड़-मरोड़ कर प्रेस में जारी कर दिया। जिस के दौरान जर्मन राष्ट्रवादियों ने इसका खुल कर विरोध करना शुरू कर दिया। इससे चिढ़ कर 19 जून 1870 को फ्रांस के शासक नेपोलियन ने प्रशा के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी और सेडॉन की लड़ाई में फ्रांसीसियों की जबर्दस्त हार हुई। उसके बाद 10 मई 1871 को फ्रैंकफर्ट (जर्मनी का पांचवाँ सबसे बड़ा शहर है) की बैठक के द्वारा दोनों राष्ट्रों के बीच शांति स्थापित हुई। इस प्रकार सेडॉन के युद्ध में ही एक महाशक्ति के हार पर दूसरी महाशक्ति जर्मनी का जीत हुआ। अंत में जाकर जर्मनी 1871 तक एक एकीकृत राष्ट्र के रूप में यूरोप के राजनैतिक मानचित्र में स्थान पाया।

इस प्रकार राष्ट्रवाद ने सिर्फ दो बड़े राज्यों के उदय को ही सुनिश्चित नहीं किया बल्कि अन्य यूरोपीय राष्ट्रों में भी इसके कारण राजनैतिक उथल-पुथल शुरू हुए। असल में इसके मूल में राष्ट्रीयता की भावना एवं लोकतांत्रिक विचारों का उदय था। हंगरी , बोहेमिया तथा यूनान में स्वतंत्रता आन्दोलन इसी राष्ट्रवाद का परिणाम था।

यूनान में राष्ट्रीयता का उदय :

इसी संदर्भ में यूनानी राष्ट्रीय आन्दोलन को देखा जा सकता है। यूनान का अपना गौरवमय अतीत रहा है। जिसके कारण उसे पाश्चात्य का मुख्य स्त्रोत माना जाता था। यूनानी सभ्यता की साहित्यिक प्रगति, विचार, दर्शन, कला, चिकित्सा विज्ञान आदि क्षेत्र की उपलब्धियाँ यूनानियों के लिए प्रेरणास्त्रोत थे। पुनर्जागरण के काल में इनसे प्रेरणा लेकर पाश्चात्य देशों ने अपनी तरक्की शुरू की। परन्तु इसके बावजूद भी यूनान तुर्की साम्राज्य के अधीन था।फ्रांसीसी क्रांति से यूनानियों में राष्ट्रीयता की

फ्रांसीसी क्रांति से यूनानियों में राष्ट्रीयता की भावना की लहर जागी, क्योंकि धर्म, जाति और संस्कृति के आधार पर इनकी एक पहचान थी।फलतः तुर्की शासन से स्वयं को अलग करने के लिए आन्दोलन चलाये जाने लगे। इसके लिए इन्होंने

हितेरिया फिलाइक (Hetairia Philike) नामक संस्था की स्थापना ओडेसा नामक स्थान पर की। इसका उद्देश्य तुर्की शासन को यूनान से ख़त्म कर उसे स्वतंत्र बनाना था। क्रांति के नेतृत्व के लिए यूनान में शक्तिशाली मध्यम वर्ग का भी उदय हो चुका था।

यूनान सारे यूरोप वासियों के लिए विचार एवं सम्मान का option था, जिसकी स्वतंत्रता के लिए पूरे यूरोप के नागरिक अपनी सरकार की उदासीनता के बावजूद भी तैयार थे। इंग्लैंड का महान कवि लार्ड

बायरन यूनानियों की स्वतंत्रता के लिए यूनान में ही शहीद हो गया। इससे यूनान की स्वतंत्रता के लिए सम्पूर्ण यूरोप में दया की लहर दौड़ने लगी। इधर रूस भी अपनी सैन्य और आर्थिक शक्ति के लालच तथा धार्मिक एकता के कारण यूनान की स्वतंत्रता का पक्षधर था।

यूनान में विस्फोटक स्थिति तब और बन गई जब तुर्की शासकों द्वारा यूनानी स्वतंत्रता संग्राम में संलग्न लोगों को बुरी तरह कुचलना शुरू किया गया। 1821 ई० में अलेक्जेंडर चिपसिलांटी के leadership में यूनान में क्रांति शुरू हो गया। रूस का जार अलेक्जेंडर व्यक्तिगत रूप से तो यूनानी राष्ट्रीयता के पक्ष में था परन्तु ऑस्ट्रिया के प्रतिक्रियावादी शासक मेटरनिख के दबाव के कारण खुल कर सामने नहीं आना चाहता था। जब नया दोस्त निकोलस आया तो उसने खुल कर यूनानियों का समर्थन किया। अप्रैल 1826 ई० में ग्रेट ब्रिटेन और रूस में एक समझौता हुआ कि वे तुर्की-यूनान विवाद में समझौता करेंगे। फ्रांस का राजा चार्ल्स X भी यूनानी स्वतंत्रता में दिलचस्पी लेने लगा। 1827 में लंदन में एक सम्मेलन हुआ जिसमें इंग्लैंड, फ्रांस तथा रूस ने मिलकर तुर्की के खिलाफ तथा यूनान के समर्थन में मिल कर कार्यवाही करने का निर्णय लिया। इस प्रकार तीनों देशों की मेल से उनकी सेना नावारिनो की खाड़ी में तुर्की के खिलाफ एक जुट हुई। तुर्की के समर्थन में सिर्फ मिस्र की सेना ही आयी। युद्ध में मिस्र और तुर्की की सेना बुरी तरह पराजित हुई और अंत में 1829 ई० में एड्रियानोपल की मेल हुई, जिसके तहत तुर्की की नाममात्र की प्रभुता(क़सम) में यूनान को शासक का अधिकार देने की बात तय हुई। परन्तु यूनानी राष्ट्रवादियों ने संधि की बातों को मानने से इंकार कर दिया। उधर इंग्लैंड तथा फ्रांस भी यूनान पर रूस के प्रभाव की अपेक्षा इसे स्वतंत्र देश बनाना बेहतर मानते थे। बाद में 1832 में यूनान को एक स्वतंत्र राष्ट्र घोषित कर दिया गया। बवेरिया के शासक 'ओटो' को स्वतंत्र यूनान का राजा घोषित किया गया।

हंगरी :

राष्ट्रवादी भावना के प्रसार का रूप हंगरी में भी नजर आता है। हंगरी पर ऑस्ट्रिया का पहले से ही शासन था। 1848 की क्रांति के प्रभाव से यहाँ भी राष्ट्रीय आन्दोलन की शुरुआत हुई , जहाँ आन्दोलन का नेतृत्व 'कोसूथ' तथा 'फ्रांसिस डिक' नामक क्रांतिकारी के द्वारा किया जा रहा था। कोसूथ लोकतांत्रिक विचारों का समर्थक था। उसने वर्गहीन समाज (Classless Society) के अपने विचारों को जनता तक पहुँचाना शुरू किया, जिस पर प्रतिबंध लगा दिया गया। फ्रांस में लुई फिलिप के पतन का हंगरी के राष्ट्रवादी आन्दोलन पर विशेष प्रभाव पड़ा । कोसूथ ने ऑस्ट्रियाई अधिकार का विरोध करना शुरू किया तथा व्यवस्था में बदलाव की मांग करने लगा। इसका प्रभाव हंगरी तथा ऑस्ट्रिया दोनों देशों की जनता पर पड़ा। जिसके कारण यहाँ राष्ट्रीयता के पक्ष में आन्दोलन शुरू हो गए। अंत में 31 मार्च 1848 ई० को आस्ट्रिया की सरकार ने हंगरी की कई बातें मान ली , जिसके अनुसार स्वतंत्र मंत्रिपरिषद(एक मंत्री बनाने) की मांग स्वीकार की गई । इसमें केवल हंगरी के सदस्य ही सम्मिलित किये गए। प्रेस को स्वतंत्रता दी गई तथा राष्ट्रीय सुरक्षा सेना की स्थापना की गई। धर्म ऊँच नीच को ख़त्म कर दी गई तथा प्रतिनिधि सभा (डायट) की बैठक प्रतिवर्ष राजधानी बुडापेस्ट में बुलाने की बात स्वीकार की गई। इस प्रकार इन आन्दोलनों ने हंगरी को राष्ट्रीय अधिकार को प्रदान किया ।

पोलैंड :

पोलैंड में भी राष्ट्रवादी भावना के कारण रूसी शासन के विरुद्ध विद्रोह शुरू हो गए। 1830 ई० की क्रांति का प्रभाव यहाँ के उदारवादियों पर भी व्यापक रूप से पड़ा था परन्तु इन्हें इंग्लैंड तथा फ्रांस की सहायता नहीं मिल सकी। अतः इस समय रूस ने पोलैंड के विद्रोह को कुचल दिया।

बोहेमिया :

बोहेमिया जो ऑस्ट्रियाई शासन के अंतर्गत था, में भी हंगरी के घटनाक्रम का प्रभाव पड़ा। बोहेमिया की बहुसंख्यक चेक जाति की स्वायत्त शासन की मांग को स्वीकार किया गया परन्तु आन्दोलन ने हिंसात्मक रूप धारण कर लिया। जिसके कारण ऑस्ट्रिया द्वारा क्रांतिकारियों का सख्ती से दमन कर दिया गया। इस प्रकार बोहेमिया में होने वाले क्रांतिकारी आन्दोलन की उपलब्धियाँ स्थायी न रह सकीं।

N.C.C